# जिप्सी राजकुमारी

# जिप्सी राजकुमारी

एक समय की बात है कि एक जिप्सी लड़की थी जिसके मन में राजकुमारी बनने की प्रबल कामना थी. वह एक जिप्सी कारवां में रहती थी और उसका नाम सिनेमॉन था.

सिनेमॉन बहुत कुछ जानती थी. क्रिस्टल बाल में देख कर वह किसी का भविष्य बता सकती थी. उसे पता था कि कौन सी जड़ी-बूटी जंगल में कहाँ मिलती थी और किस प्रकार उन से दवाइयाँ बनाई जा सकती थीं. वह हवा से बातें कर सकती थी और भालू के संग नाच सकती थी.

लेकिन वह एक राजकुमार के साथ नृत्य करना चाहती थी.

शाम के समय, खाना खाने के बाद, वह आग के निकट बैठ कर अपनी बूढ़ी मौसी से जादूगरों और उनके जादू की कहानियाँ सुनती. मौसी उसे जलपरियों और समुद्री लुटेरों की, ड्रैगन और राजकुमारियों की कहानियाँ सुनाती.

"ओह," सिनेमॉन ने कहा, "काश, राजकुमारी साइप्रिना की तरह मैं भी एक महल में रह पाती."

"एक राजकुमारी भी दुःखी हो सकती है," बूढ़ी मौसी ने कहा.

"असंभव है," सिनेमॉन ने लकड़ी के एक टुकड़े को, जो उसे जंगल में मिला था, घिसते हुए कहा.

बूढ़ी जिप्सी औरत प्रसन्नता से मुस्कराई जब सिनेमॉन ने लकड़ी में कैद एक जीव को स्वतंत्र कर दिया. "बहुत कुछ है जो सोने के मुकुट से अधिक बहुमूल्य होता है," उसने कहा.

सिनेमॉन को उसकी बात का विश्वास न हुआ.



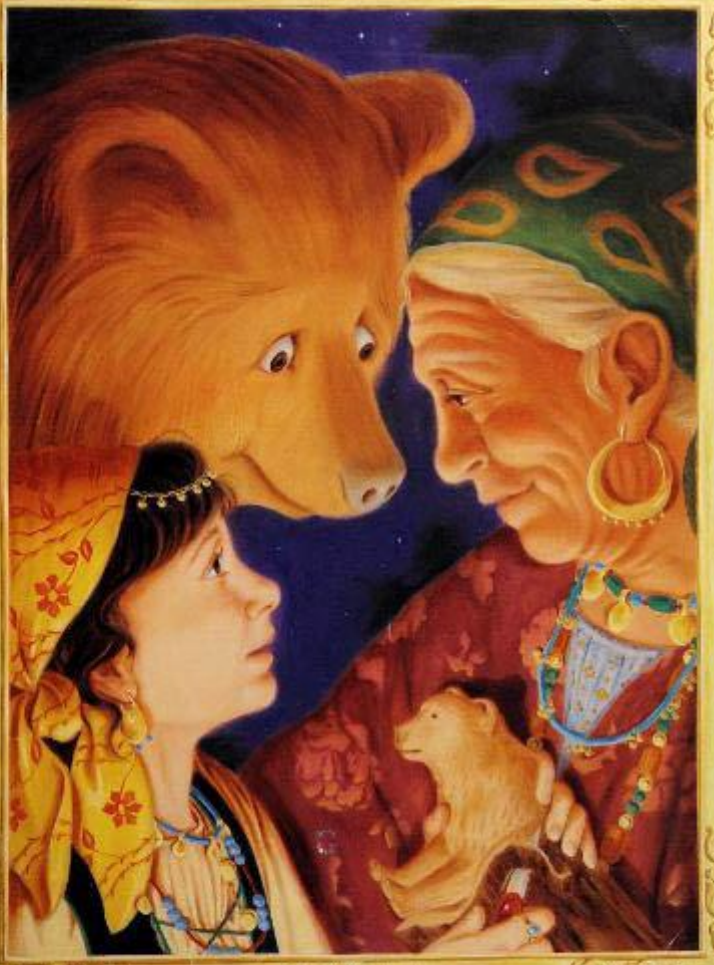

एक दिन अपना भाग्य जानने के लिए राजकुमारी साइप्रिना जिप्सियों के कारवां में आई. सिनेमॉन ने क्रिस्टल बाल में देखा और आश्चर्य से उसकी आँखें फ़ैल गईं. “मुझे एक विशाल महल दिखाई दे रहा है. मैं एक सुन्दर राजकुमार देख रही हूँ. हीरे, मोती, जवारात....मुझे अकूत धन-संपदा दिखाई दे रही है!”

राजकुमारी साइप्रिना प्रसन्नता से हँसी. फिर उसने अपना पर्स खोला और एक चाँदी का सिक्का सिनेमॉन की हथेली पर रख दिया. “जिप्सी लड़की मैंने सुना है कि तुम भालू के साथ नृत्य करती हो. मैं तुम्हारा नृत्य देखना चाहती हूँ.”

“मैं कोशिश करूंगी,” सिनेमॉन ने कहा, “लेकिन बब्लैत्ज़ी को हर समय नाचना अच्छा नहीं लगता.”

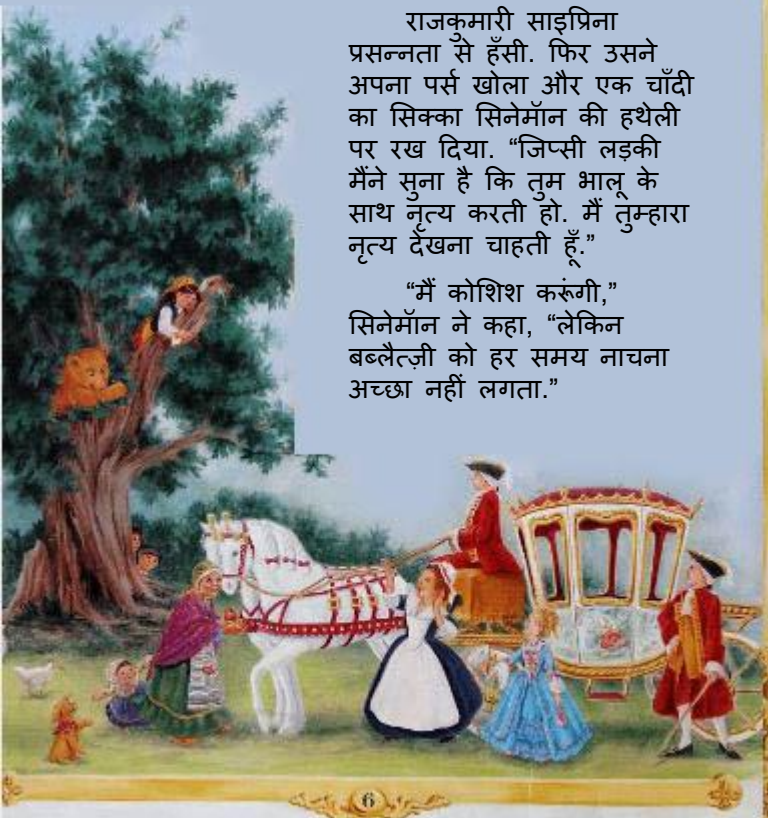

सिनेमॉन ने अपनी डफली उठाई और एक जिप्सी गीत गाने लगी:

*बब्लैत्ज़ी, बब्लैत्ज़ी*

*आओ करो थोड़ा सा नृत्य*

*बब्लैत्ज़ी, बब्लैत्ज़ी*

*मैं भी करूंगी तुम संग नृत्य.*

बब्लैत्ज़ी आया और बब्लैत्ज़ी नृत्य करने लगा.

"कितना मज़ा आ रहा है," राजकुमारी ने कहा और ताली बजाने लगी. "तुम्हें और तुम्हारे भालू को मेरे महल में आना ही होगा. हम इकट्ठे खेलेंगे और फिर मैं कभी भी दुःखी न होऊंगी.

बब्लैत्ज़ी ने सिर हिला कर इंकार कर दिया. वह नहीं जाएगा.

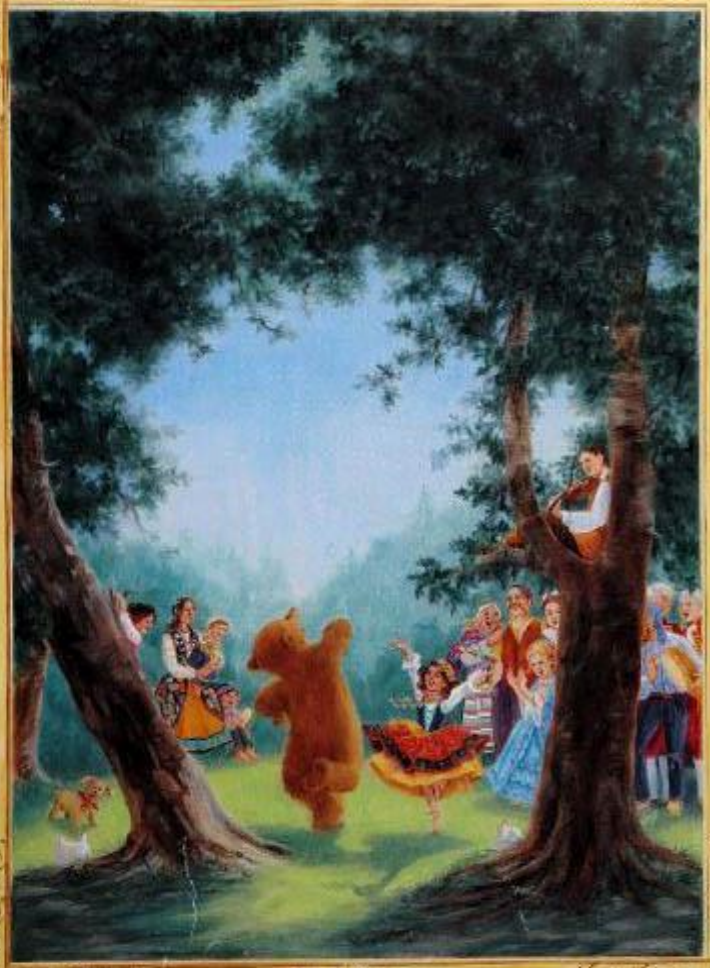

लेकिन सिनेमॉन बिलकुल भी न हिचकिचाई. उसने अपनी मौसी को प्यार किया, हाथ हिला कर बब्लैत्ज़ी और अन्य जिप्सियों को अलविदा कहा और शाही सवारी में जा बैठी.

राजकुमारी साइप्रिना ने कहा, “आज से तुम राजकुमारी सिनेमॉन के नाम से जानी जाओगी.”

और वह उसी नाम से जानी जाने लगी.

महल की दासियों ने सुगंधित पानी से उसे स्नान करवाया. उसके बिखरे हुए काले बालों को संवारा, खुशबूदार तेल लगा कर कंघा किया. फिर साटन का एक गाउन, जिस पर बहुमूल्य रत्नों से कढ़ाई की गई थी, उसे पहनाया.

सिनेमॉन ने महल के दर्पण में अपने आप को देखा और दर्पण में जो लड़की उसकी ओर देख रही थी उसे वह पहचान ही न पाई.

आरम्भ में तो दोनों राजकुमारियाँ प्रसन्नता के साथ एक साथ खेलीं. राजकुमारी सिनेमॉन आबनूस के घोड़े पर बैठ गई, जिसकी आँखें नीलम की थीं और जिस पर झनझनाते गुच्छे लटक रहे थे. राजकुमारी साइप्रिना ने अपने सारे अद्भुत खिलौने उसे दिखाए.

हर दिन सुबह महल की दासियाँ सिनेमॉन के बालों को संवारतीं और उन में सुगंधित तेल लगातीं. हर दिन शाम के समय वह राजकुमारी के साथ महल के शानदार नृत्य-कक्ष में नृत्य करती.

"यह सब कितना आनन्द-दायक है न?" नृत्य करते हुए राजकुमारी साइप्रिना ने कहा.

राजकुमारियों के ऊंची एड़ी वाले जूते पहनने के कारण सिनेमॉन के पाँव में जले पड़ गए थे और दर्द हो रहा था. वह राजकुमारी साइप्रिना को बताना चाहती थी कि बब्लैत्ज़ी के साथ नृत्य करने में उसे अधिक आनन्द मिलता था पर वह कह न पाई क्योंकि राजकुमारी साइप्रिना घूमती हुई दूर जा चुकी थी.

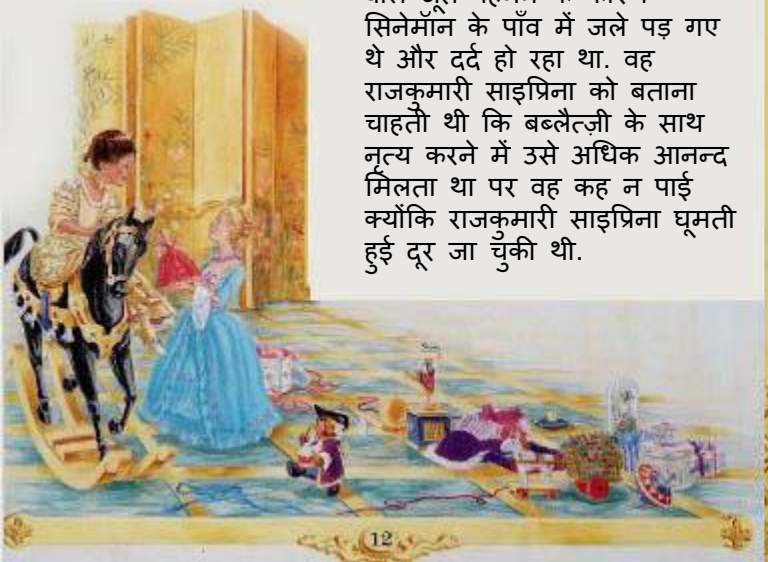

दिन बीते, सप्ताह बीते. राजकुमारी के अद्भुत खिलौने अब सिनेमॉन को उतने मनोरंजक न लगते थे. जब भी उनकी चाभी घुमाई जाती तो वह करते जैसा उन्होंने पहले किया था.

"ड्रैगन और जलपरियाँ कहाँ हैं?" सिनेमॉन ने पूछा.

राजकुमारी साइप्रिना ने अपने नाज़ुक पाँव से संगमरमर के महल के फर्श को थपथपाया और कहा, "ऐसे मूर्खता पूर्ण प्रश्न मत करो, सिनेमॉन! ड्रैगन और जलपरियाँ नहीं होते. चलो मुझे जिप्सी गीत सुनाओ!"

लेकिन सिनेमॉन का गीत गाने का मन न था.

राजकुमारी साइप्रिना जिप्सी राजकुमारी से उकता गई थी. "यह बहुत उबाऊ है," उसने अपने नये मित्रों से कहा.

और सच में वह थी.

उस रात सिनेमॉन अपने नर्म, शाही बिस्तर पर करवटें लेती रही. “मैं अकेली हूँ,” वह रोने लगी. “बिलकुल अकेली.”

जब आखिरकार उसे नींद आई तो उसने सपना देखा कि उसकी मौसी उसे ढूँढ़ रही थी.

“सिनेमॉन, सिनेमॉन. तुम कहाँ हो, मेरी बच्ची?”

और सिनेमॉन ने उत्तर दिया, “मैं खो गई हूँ.”

अगली सुबह उसे अपना सपना याद न रहा. उसके मन में बस एक ही इच्छा थी, अपने पाँव के नीचे वह ठंडे संगमरमर के फर्श के बजाय उष्ण धरती को महसूस करना चाहती थी. नाश्ते के समय कुछ भी खाने का उसका मन न था. उसने वहां से जाने की अनुमति माँगी .

राजकुमारी साइप्रिना ने अधीरता से हाथ हिलाया.

सिनेमॉन भोजन कक्ष से बाहर आ गई. वह महल के विशाल फाटक के पास आई. उसने सावधानी से फाटक खोला और उस रास्ते पर आ गई जो महल से दूर जाता था.

हवा ने उसके कान में फुसफुसा कर कहा, “सिनेमॉन, सिनेमॉन.” वह हवा के पीछे-पीछे जाना चाहती थी लेकिन ऊंची एड़ी के जूतों में चलना कठिन था. सिनेमॉन वापस लौट आई.

उस रात जब सिनेमॉन अपने नर्म, शाही बिस्तर पर करवटें ले रही थी तो उसकी मौसी फिर उसके सपने में आई.

“तुम कौन हो, मेरी बच्ची?” मौसी ने पूछा.

सिनेमॉन ने उत्तर दिया, “मुझे याद नहीं है.”

अगले दिन सिनेमॉन और अधिक बेचैन थी. महल के फाटक की छड़ें उसे किसी सोने के पिंजरे की छड़ों समान लगीं.



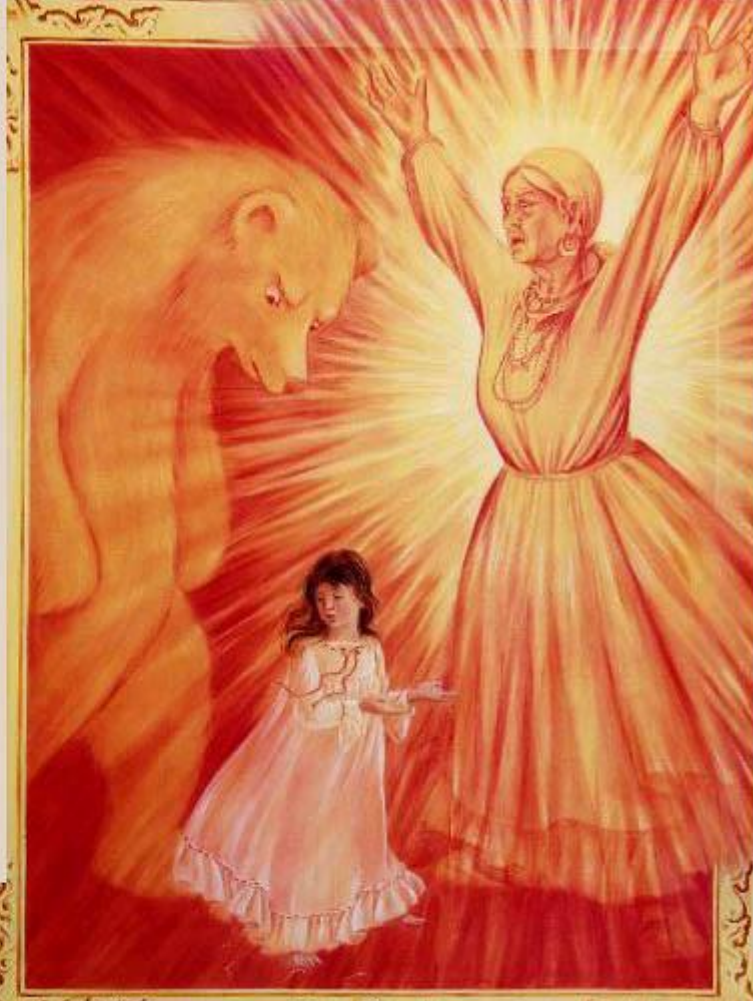

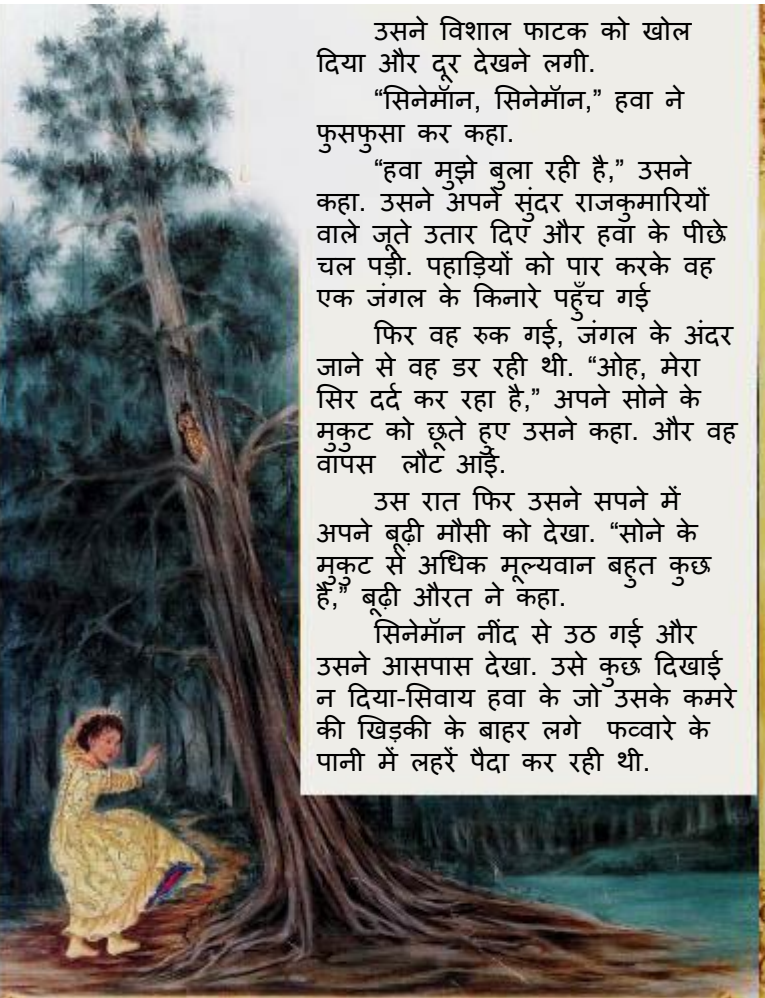

उसने विशाल फाटक को खोल दिया और दूर देखने लगी.

"सिनेमॉन, सिनेमॉन," हवा ने फुसफुसा कर कहा.

"हवा मुझे बुला रही है," उसने कहा. उसने अपने सुंदर राजकुमारियों वाले जूते उतार दिए और हवा के पीछे चल पड़ी. पहाड़ियों को पार करके वह एक जंगल के किनारे पहुँच गई

फिर वह रुक गई, जंगल के अंदर जाने से वह डर रही थी. "ओह, मेरा सिर दर्द कर रहा है," अपने सोने के मुकुट को छूते हुए उसने कहा. और वह वापस लौट आई.

उस रात फिर उसने सपने में अपने बूढ़ी मौसी को देखा. "सोने के मुकुट से अधिक मूल्यवान बहुत कुछ है," बूढ़ी औरत ने कहा.

सिनेमॉन नींद से उठ गई और उसने आसपास देखा. उसे कुछ दिखाई न दिया-सिवाय हवा के जो उसके कमरे की खिड़की के बाहर लगे फव्वारे के पानी में लहरें पैदा कर रही थी.

अगली सुबह सिनेमॉन ने राजकुमारियों वाले ऊंची एड़ी के जूते न पहने. उसने अपना सोने का मुकुट भी नहीं पहना. नाश्ते के लिये वह विशाल कक्ष में न गई. वह महल के फाटक के पास आ गई. उसने फाटक पूरा खोल दिया और हवा के पीछे चल पड़ी. उसने घूम कर दूर चमकते हुए महल को देखा.

हवा ने उसके गालों को छुआ और फुसफुसा कर कहा, "सिनेमॉन, सिनेमॉन." और सिनेमॉन जंगल के अंदर चली गई. झाड़ियाँ और कांटे उसकी ड्रेस को चीरने लगे. लेकिन इस बार सिनेमॉन वापस न लौटी. वह जंगल के अंदर, बहुत अंदर चलती गई. वह सारा दिन चलती रही और जब अन्धेरा हुआ और आकाश में तारे चमकने लगे, वह एक छोटी झील के निकट पहुँच गई.

वहाँ उसने कुछ देर आराम किया, जंगली बेर खाये और पत्तों के बिस्तर पर इतनी गहरी नींद सोयी जितनी गहरी नींद वह महल के नर्म, शाही बिस्तर पर कभी न सोयी थी.

जब वह उठी तो उसे लगा कि उसे महल की सुंदर दीवारें और सेवक दिखाई देंगे. इसके बजाय उसे सुनहरी धूप और झील के ठंडे पानी में तैरता एक विशाल भालू दिखाई दिया.

“बब्लैत्ज़ी!” सिनेमॉन प्रसन्नता से चिल्लाई.

बब्लैत्ज़ी ने आश्चर्य से हवा को सूंघा. उसे लगा कि उसके खोये हुए मित्र ने उसे पुकारा था. लेकिन उसने सिनेमॉन को पहचाना नहीं.

"गर्रर्रर्र!" वह गुर्राया. फिर वह घूमा और झील के दूर वाले किनारे की ओर तैर कर चला गया और घने जंगल में लुप्त हो गया.

"क्या मैं इतना बदल गई हूँ?" स्वच्छ पानी में अपना प्रतिबिंब देख कर सिनेमॉन सोचने लगी. उसने अपने बालों को छुआ. सुगन्धित तेल लगाने से बाल कड़े हो गए थे.

"अह!" उसने कहा और झील में कूद गई. जब बालों में लगा तेल और सुगंध पानी से धुल गए, वह प्रसन्नता से पानी से बाहर आई. "बॅब्लैत्ज़ी शायद नहीं जानता कि मैं कौन हूँ, लेकिन मैं जानती हूँ कि मैं कौन हूँ."

"मैं सिनेमॉन हूँ! मैं एक जिप्सी लड़की हूँ! मैं जानती हूँ कि हवा से कैसे बातें करते हैं और ....."

"…..एक भालू का पीछा कैसे करते हैं."

वह सारा दिन चलती रही. सूर्य के अस्त होने और आकाश में चन्द्रमा के उदय होने के पश्चात भी न रुकी. वह बब्लैत्ज़ी का अनुगमन करती रही और आखिरकार अपने जिप्सी केंप तक पहुँच गई.

केंप के निकट जलती आग धीमी पड़ गई थी. न किसी ने उसे देखा, न किसी ने उसकी आहट सुनी. किसी ने भी नहीं, सिवाय बब्लैत्ज़ी के. उसने हवा को सूंघा और गुर्राया, "गर्रर्रर !"

सिनेमॉन धीमी आवाज़ में गाने लगी:

*बब्लैत्ज़ी! बब्लैत्ज़ी!*

*आओ करें हम थोड़ा नृत्य*

*बब्लैत्ज़ी! बब्लैत्ज़ी!*

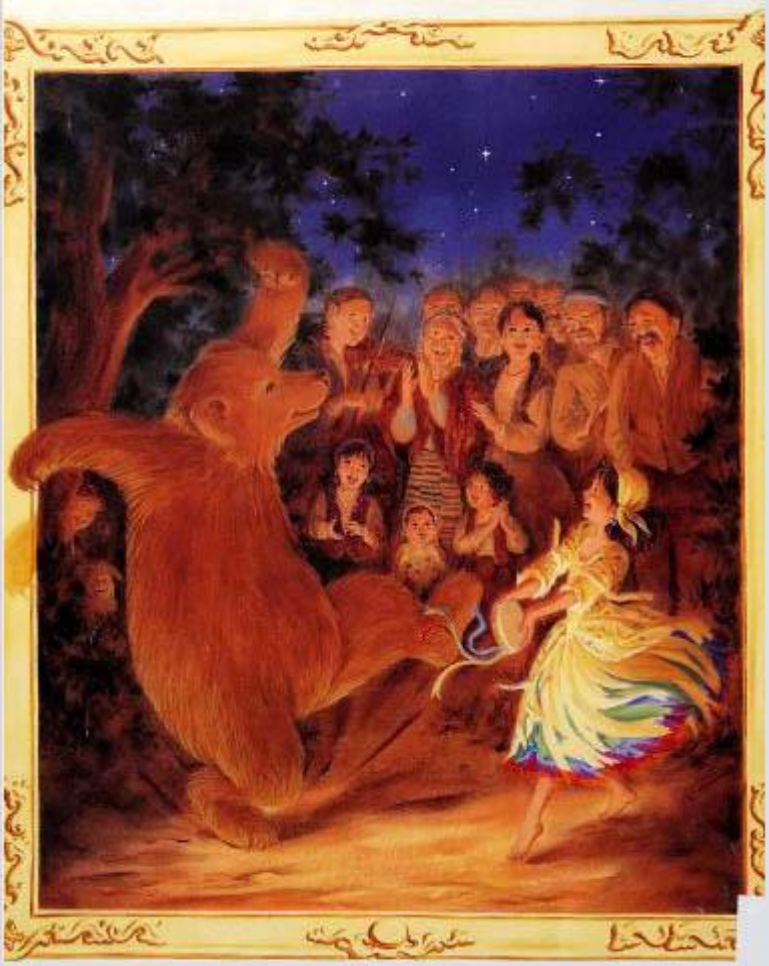

और वह सारी रात नृत्य करते रहे!

समाप्त